कुशाग्र जैन, रंग चित्र, कला समीक्षा, खंड 1,*अंक.* 2 (*मई* 2025), *पृ.* 50-55

रंग चित्र

कुशाग्र जैन*

1.
रंगों की बातें,
कैनवस पर चुपचाप हों,
मन मुस्कुराता।

2.
शब्दों का जादू,
दिल से निकले भाव सब,
कविता बन जाए।

3.
तूलिका बोले,
बिन बोले कह जाए वह,
जीवन के रंग।

4.
पढ़ते हैं हम जब,
कहानी बनती जीवन,
सपनों का दर।

5.
शब्दों में शक्ति,
जैसे दीपक की लौ हो,
अंधेरे हर ले।

6.
रंग भरे सपने,
हर चित्र में छिपे हैं,
एक नई दुनिया।

7.
कविता सिखाए,
कैसे दिल से जीते हैं,
हर सुख-दुख साथ।

8.
कहानी बोले,
बीते कल की यादों से,
आज को रोशन।

9.
कला है जीवन,
हर रूप में मुस्काती,
भावों की भाषा।

10.
कवि की कलम से,
उगते हैं उम्मीद के,
नए शब्द-फूल।